the pioneer

LUCKNOW WEDNESDAY I APRIL 17, 2013

'Important to lay stress on national food security'

PIONEER NEWS SERVICE ■ LUCKNOW

(Top) Scientists felicitated on Tuesday pose for photographers with Agriculture Minister Anand Singh; (above) MS Swaminathan being presented a memento at IISR

It is important to lay stress on national food security which will be the best solution against fight for hunger.

This view was expressed by MS Swaminathan, who is known as the Father of Green Revolution, at the 24th national conference on sustainable farming system and bioindustrial watershed management for food security and enhancing income of the farming community on Tuesday. The programme was held at Indira Gandhi Pratishthan and organised by Indian Soil Conservation Society of India. Commenting on the state of agriculture in Uttar Pradesh, he said it was good.

Swaminathan said that it was important that on the basis of public policies, facilities should be provided which allowed stable development for farmers. He said that agricultural production should go hand in hand with proper usage of water.

Speaking on the occasion, Agriculture Minister Anand Singh said that it was necessary that farmers focused on gardening, horticulture, animal husbandry and dairy and other areas which could bring him extra income. He added that it was important to include bioindustrial watershed management in the projects which would bring in more management and more prosperity to farmers. The minister said that the farms were getting smaller and thus agricultural scientists were endeavouring to concentrate on productive species. He added that efforts should be made for farmers to be provided seeds, manure and fertilisers. The minister also felicitated 29 scientists.

The programme also saw the presence of Agriculture Production commissioner Alok Ranjan. Principal Secretary, Agriculture, Devashish Pandey and director, Agriculture Development, Mitra Singh.

Meanwhile, Swaminathan visited Indian Institute of Sugarcane Research and interacted with the scientists. He spoke on the importance of three Ms in agriculture research design and implementation — management, monitoring and measurement of research impact in terms of benefit derived by targeted clientele groups or society. He appealed to the scientists to sustain the high quality of sugarcane research in order to best utilise public money and continue to give high return to each rupee spent on it.

कैनविज टाइम्स
6 बुधवार, 17 अप्रैल 2013

लखनऊ

शोध से मिलेगा उच्च गुणों वाला गन्ना

कैनविज टाइम्स ब्यूरो

विश्व के महान कृषि वैज्ञानिक प्रो. एमएस स्वामीनाथन ने वैज्ञानिकों को दिए टिप्स

लखनऊ। विश्व के गिने-चुने कृषि वैज्ञानिकों में शुमार प्रो. एमएस स्वामीनाथन ने मंगलवार को भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान परिसर का भ्रमण किया। उन्होंने वैज्ञानिकों से रूबरू होकर जरूरी टिप्स भी दिए। कहा कि चीनी उद्योग व गन्ना विकास को सशक्त व टिकाऊ बनाना है, तो उच्च गुणवत्ता का गन्ना शोध जरूरी है। सभागार में कृषि वैज्ञानिकों से कहा कि उच्च गुणवत्ता के शोध कार्यक्रम का विकास एवं क्रियान्वयन के लिए तीन एम मैनेजमेंट, मॉनीटरिंग एवं मेजरमेंट का बहुत महत्व है।

प्रो. स्वामीनाथन ने कहा कि मैनेजमेंट का मतलब है कि शोध प्रारूप में सभी अवयवों का इस प्रकार समावेश हो कि उससे अधिकतम लाभ प्राप्त हो सके। मॉनीटरिंग मतलब शोध कार्यों की सतत निगरानी और मेजरमेंट का मतलब यह है कि शोध कार्यक्रमों के संचालन के बाद क्या फायदा या प्रभाव रहा, इसकी जानकारी अवश्य होनी चाहिए। इन तीनों के उचित प्रयोग एवं सामंजस्य से गन्ना शोध एवं कृषि के अन्य क्षेत्रों में काम होने चाहिए, जिससे खर्च वाले संसाधनों से भरपूर फायदा मिल सके। देश में जब कृषि शोध के प्रभाव का पहली बार आकलन किया गया तो गन्ना शोध में खर्च किए गए प्रत्येक रुपए से सबसे ज्यादा फायदा हुआ था। उन्होंने गन्ना वैज्ञानिकों का आह्वान किया कि आप उस स्थिति को बरकरार रखें, जिससे देश में गन्ना एवं चीनी का विकास तेजी से होता रहे। कृषि शोध से विकसित उत्पादन तकनीकों की सराहना करते हुए कहा कि हम वैज्ञानिकों को पब्लिक पॉलिसी को ध्यान में रखते हुए शोध करना चाहिए तथा इसके साथ सामंजस्य बनाकर चलना चाहिए। वैसे तो गन्ना शोध में बहुत तरक्की हुई है, लेकिन कुछ समस्याएं भी हैं, जिनका संज्ञान बहुत आवश्यक है। क्लाइमेट चेंज, मूल्य में उतार-चढ़ाव, गन्ना में अधिकतम व न्यूनतन उत्पादन चक्र, उच्च गुणवत्ता के निवेशों की कमी आदि ज्वलंत समस्याएं हैं। इनका शोध में ध्यान रखना आवश्यक है। उन्होंने राष्ट्रीय दुग्ध विकास बोर्ड की सफलता की सराहना करते हुए ऐसे उदाहरण को कृषि के अन्य क्षेत्रों में दोहराने की आवश्यकता पर बल दिया। इस अवसर पर गन्ना अनुसंधान संस्थान के निदेशक डॉ. सुशील सोलोमन ने प्रो. स्वामीनाथन का स्वागत किया। कार्यक्रम का संचालन वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. एके शाह ने किया।

अमर उजाला
लखनऊ, 17 अप्रैल 2013
My City

वैज्ञानिक शोध में नई चुनौतियों का ख्याल रहे

आईआईएसआर आए प्रो. स्वामीनाथन ने कृषि वैज्ञानिकों को आम लोगों की जरूरतें नजर में रखने की दी नसीहत

लखनऊ (ब्यूरो)। गन्ने की बेहतर किस्म तैयार करने में अब तक वैज्ञानिकों का योगदान संतोषजनक है, लेकिन नई समस्याएं नई चुनौतियां लेकर आई हैं। बदलती जलवायु, गुणवत्ता में कम निवेश, गन्ने के फसल चक्र में अधिकतम और न्यूनतम उत्पादन का क्रम और बाजार मूल्यों में उतार-चढ़ाव, ऐसी चीजें हैं जिन्हें नजर में रखते हुए वैज्ञानिकों को अपने शोध और अध्ययन अंजाम देने होंगे। यह नसीहत थी देश के विख्यात कृषि वैज्ञानिक प्रो. एमएस स्वामीनाथन की। वे मंगलवार को राजधानी के इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ शुगरकेन रिसर्च में गन्ना वैज्ञानिकों को संबोधित कर रहे थे।

भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान (आईसीएआर) के पूर्व महानिदेशक और राज्यसभा सांसद प्रो. स्वामीनाथन ने वैज्ञानिकों को अपने संबोधन में शोध के दौरान उच्च गुणवत्ता के गन्ने के विकास की जरूरत भी बताई। उन्होंने दावा किया कि इसी से देश के चीनी उद्योग को मजबूती मिलेगी। दूसरी ओर उन्होंने वैज्ञानिकों को पब्लिक पॉलिसी को हमेशा नजर में रखने को कहा, ताकि धरातल पर जरूरतें पूरी करने में उनके शोध सहायक साबित हों। दूसरी ओर आईआईएसआर के निदेशक डॉ. सुशील सोलोमन ने बताया कि संस्थान द्वारा विकसित गन्ने की किस्में उत्तर भारत में लोकप्रिय हुई हैं। तकनीकी अधिकारी अनीता सावनानी ने प्रो. स्वामीनाथन को संस्थान की गतिविधियों के बारे में बताया। वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. एके साह ने भावी योजनाओं पर प्रकाश डाला।

लखनऊ, 17 अप्रैल 2013 दैनिक जागरण | 5

गुणवत्तायुक्त शोध के लिए महत्वपूर्ण 'एम' फैक्टर

जागरण संवाददाता, लखनऊ : उच्च गुणवत्ता के शोध के लिए तीन 'एम' जिसमें मैनेजमेंट, मॉनीटरिंग व मेजरमेंट शामिल है काफी महत्वपूर्ण होता है। इन तीनों 'एम' का उचित प्रयोग एवं सामंजस्य से खर्च होने वाले संसाधनों का भरपूर फायदा मिल सकता है।

यह बात भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान में कृषि वैज्ञानिकों को संबोधित करते हुए भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के पूर्व महानिदेशक प्रो. एमएस स्वामीनाथन ने कही।

◆ एमएस स्वामीनाथन ने जनहित में शोध करने को कहा

उन्होंने कहा कि देश में कृषि शोध में प्रभावी आकलन पहली बार किया गया था तब गन्ना शोध में खर्च किए गए प्रत्येक रुपये से फायदा हुआ था। अब वैज्ञानिकों की जिम्मेदारी है कि वह इस स्थिति को बरकरार रखें। प्रो. स्वामीनाथन ने कहा कि वैज्ञानिकों के जनहित का ध्यान रख कर शोध करना चाहिए। मुख्य चुनौती जलवायु परिवर्तन, मूल्य में उतार चढ़ाव, गन्ना में अधिकतम-न्यूनतम उत्पादन चक्र, उच्च गुणवत्ता के निवेशकों की कमी है। इस अवसर पर संस्थान के निदेशक डॉ. सुशील सोलोमन ने संस्थान द्वारा विकसित कोलख 94184 प्रजाति के बारे में बताया कि उत्तर प्रदेश व बिहार में यह प्रजाति काफी सफल रही है। इसके अलावा गन्ना कटाई, बोवाई आदि के लिए विकसित यंत्रों की जानकारी दी।